अध्याय 3

वैदिक सभ्यता

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- इस सभ्यता का उद्भव विकास कैसे हुआ और इसमें किस प्रकार सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिवर्तन हुए।
- इस सभ्यता के दौरान वैदिक, साहित्यिक, वेद उपनिषद की रचना कैसे और किन परिस्थितियों में हुई और इस साहित्य ने उस काल के मानव को कैसे और कहाँ तक प्रभावित किया।
- इस काल की संस्कृति कैसे भारत की महान संस्कृति कहलायी और इसके लिए कौन-कौन से दार्शनिक, विचारक और प्रवर्तकों ने इसे कैसे नयी ऊंचाईयां दीं।

वैदिक सभ्यता के उद्भव (Origin of Vedic Period)

वैदिक सभ्यता के निर्माता आर्य थे। वैदिक संस्कृति में आर्य शब्द का अर्थ—श्रेष्ठ, है। मैक्समूलर ने 1853 ई. में आर्य शब्द का प्रयोग श्रेष्ठ मानवीय समुदाय के रूप में किया था जिनकी भाषा संस्कृत थी। भारत में आर्यों के बारे में जानकारी ऋग्वेद से मिलती है, जो हिन्द-यूरोपीय भाषाओं का सबसे पुराना ग्रन्थ है। इसमें आर्य शब्द का 36 बार उल्लेख है। इराक़ से प्राप्त 1600 ई.पू. के कस्साइट अभिलेख तथा सीरिया से प्राप्त 1400 ई.पू. के मितन्नी अभिलेख में आर्य शब्द का उल्लेख मिलता है, जिससे पश्चिम एशिया में आर्य भाषा-भाषियों की उपस्थिति का पता चलता है। बोगाजकोई अभिलेख (1400 ई.पू.) से 1. इन्द्र, 2. मित्र, 3. वरूण, 4. नासत्य चार वैदिक देवताओं का उल्लेख मिलता है।

आर्यों के मूल निवास स्थान के संदर्भ में विद्वानों के बीच मतभेद हैं। सर्वाधिक मान्य मत के अनुसार, आर्यों का मूल निवास आल्पस पर्वत के पूर्वी क्षेत्र (यूरेशिया) में था।

अध्ययन की सुविधा के लिए वैदिक संस्कृति को दो भागों में बाँटा गया है—ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.) एवं उत्तरवैदिक काल (1000-600 ई.पू.)।

तालिका 3.1: मूल स्थान संबंधी विभिन्न मत

विद्वान	मूल स्थान
दयानन्द सरस्वती	तिब्बत
नेहरिंग एवं प्रो. गार्डन चाइल्ड	दक्षिणी रूस
प्रो. मैक्समूलर	मध्य एशिया (बैक्ट्रिया)
बालगंगाधर तिलक	उत्तरी ध्रुव
डॉ. अविनाशचन्द्र दास	सप्तसैन्धव प्रदेश
गंगानाथ झा	ब्रह्मर्षि देश
गाइल्स महोदाय	हंगरी तथा डेन्यूब नदी की घाटी

ऋग्वैदिक काल (Rigvedic Period)

इस काल के अध्ययन का एकमात्र स्रोत ऋग्वेद है। ऋग्वैदिक काल में आर्यों का जीवन अस्थायी प्रकार का होता था।

ऋग्वैदिक कालीन आर्य यायावर घुमन्तू थे। जो एक ही स्थान पर स्थायी रूप से घर बनाकर नहीं रहते थे।

भौगोलिक विस्तार

ऋग्वेद में सप्त सैन्धव प्रदेश का वर्णन मिलता है। यह सात नदियाँ— सिन्धु (सिंध/सुवासा), सतलुज (शतुद्रि), व्यास (विपाशा), रावी (परूष्णी), चेनाब (अस्किनी), झेलम (वितस्ता) तथा घग्घर (सुषोमा) से घिरा क्षेत्र था। ऋग्वेद में अफगानिस्तान की चार नदियाँ—कुभा (काबुल), क्रुमु (कुर्रम), गोमती (गोमल) और सुवास्तु (स्वात) का उल्लेख है। इससे स्पष्ट है कि आर्य सर्वप्रथम पंजाब और अफगानिस्तान क्षेत्र में बसे थे।

ऋग्वैदिक आर्यों की सबसे पवित्र नदी सरस्वती थी, जिसे मातेतमा, देवीतमा एवं नदीतमा कहा गया है। ऋग्वेद में चार समुद्रों का उल्लेख है। संभवत: समुद्र किसी जलराशि का वाचक था। ऋग्वेद में गंगा नदी का एक बार जबकि यमुना नदी का तीन बार उल्लेख हुआ है। मरूस्थल के लिए धन्व शब्द का उपयोग किया गया है। ऋग्वेद में हिमालय पर्वत एवं इसकी एक चोटी मुजवंत का भी उल्लेख है। ऋग्वैदिक पुरातात्विक साक्ष्य मुख्यत: तीन प्रकार के हैं—काले एवं लाल मृद्भाण्ड, ताम्र पुंज तथा गेरूवर्णी मृद्भाण्ड।

राजनीतिक स्थिति

ऋग्वैदिक प्रशासन मुख्यत: एक कबीलाई व्यवस्था वाला शासन था, जिसमें सैनिक भावना प्रमुख थी। सबसे छोटी इकाई कुल (परिवार) थी, जिसका प्रधान कुलप होता था। ग्राम, विश और जन ये उच्चतर इकाई थे। ग्राम संभवत: कई परिवारों के समूह को कहते थे। ग्रामणी ग्राम का प्रधान होता था।

'विश' कई ग्रामों का समूह था। इसका प्रधान विशपति कहलाता था। अनेक विशों का समूह जन होता था। जन के अधिपति को 'जनपति' या 'राजा' कहा जाता था। ऋग्वेद में 'जन' शब्द का उल्लेख 275 बार मिलता है, जबकि 'जनपद' शब्द का उल्लेख एक बार भी नहीं मिलता है।

जनों के प्रधान को 'राजन' कहा जाता था। राजा के चुनाव में समिति का महत्वपूर्ण योगदान था। राजा को 'गोपति' कहा जाता था। राजा की सहायता हेतु पुरोहित, सेनानी एवं ग्रामीण नामक प्रमुख अधिकारी थे। इनमें सबसे प्रमुख पुरोहित था।

ऋग्वेद में सभा, समिति, विदथ तथा गण जैसी संस्थाओं का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद की सबसे प्राचीन संस्था विदथ थे। सभा मुख्य रूप से वृद्ध जनों एवं कुलीन व्यक्तियों की संस्था थी। इसके सदस्यों को सुजान कहा जाता था। समिति कबीलों की आम सभा थी, जिसके प्रमुख को ईशान कहा जाता था। स्त्रियाँ केवल सभा में ही भाग ले सकती थी। विदथ में लूटी गई वस्तुओं का बँटवारा होता था।

बलि प्रजा द्वारा राजा को स्वेच्छा से दिया जाने वाला उपहार था। राजा इसके बदले उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी लेता था।

राजा नियमित या स्थायी सेना नहीं रखता था। व्रात, गण, ग्राम और सर्ध नाम से कबायली टोलियाँ लड़ाई लड़ती थी।

दशराज्ञ युद्ध परूष्णी (रावी) नदी के तट पर भरत वंश के राजा सुदास तथा दस अन्य जनों (पाँच आर्य एवं अनार्य) के बीच हुआ था। पाँच आर्य कबीले—पुरू, यदु, तुर्वस, द्रुहु, एवं अनु तथा पाँच अनार्य कबीले—अकीन, पक्थ, भलानश, विषाणी एवं शिवि थे। इसमें सुदास की विजय हुई थी। ऋग्वेद के 7वें मण्डल में इस युद्ध का उल्लेख मिलता है। इस युद्ध में भरत जन की विजय हुई तथा पराजित जनों में पुरू जन सबसे महान था। कालांतर में पुरू और भरत जनों में मैत्री हो गई तथा कुरू नामक नया शासक कुल बना।

सामाजिक स्थिति

ऋग्वैदिक समाज के संगठन का आधार गोत्र था, जो प्रत्येक व्यक्ति की पहचान का आधार था। समाज पितृसत्तात्मक था। संयुक्त परिवार की प्रथा प्रचलित थी। ऋग्वेद के 10वें मण्डल में वर्णित पुरुष सूक्त में चार वर्णों की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है। इसमें कहा गया है कि ब्राह्मण परम-पुरुष के मुख से, क्षत्रिय उसकी भुजाओं से, वैश्य उसकी जाँघों से एवं शूद्र उसके पैरों से उत्पनन हुआ है। इस काल में व्यवसाय के आधार पर ही समाज का विभेद प्रारंभ हुआ।

प्रारंभ में हमें तीन वर्णों का उल्लेख मिलता है—ब्रह्म, क्षत्र एवं विश। शूद्र शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद के 10वें मण्डल के पुरुष सूक्त में मिलता है। ऋग्वेद में दास प्रथा का उल्लेख भी मिलता है।

स्त्रियों की दशा

ऋग्वैदिक समाज में स्त्रियों की दशा काफी अच्छी थी। कन्याओं का उपनयन संस्कार होता था। स्त्रियों में पुनर्विवाह, नियोग प्रथा एवं बहुपति विवाह का प्रचलन था। बाल विवाह का प्रचलन नहीं था। स्त्रियों को यज्ञ करने का अधिकार था। लोपामुद्रा, घोषा, सिक्ता, विश्ववारा, अपाला आदि विदुषी स्त्रियों ने ऋग्वेद की बहुत-सी ऋचाओं की रचना की है। पर्दा प्रथा एवं सती प्रथा का प्रचलन नहीं था।

आर्थिक स्थिति

ऋग्वैदिक आर्यों का प्रारंभिक जीवन अस्थायी था। इनकी संस्कृति मूलत: ग्रामीण थी। कबायली संरचना के अनुकूल पशुपालन मुख्य पेशा तथा कृषि गौण पेशा था। पशुओं में गाय सर्वाधिक महत्वपूर्ण थी, जिसका ऋग्वेद में 176 बार उल्लेख मिलता है।

धनी व्यक्ति को गोमत तथा राजा को गोपति कहा जाता था। पणि नामक व्यापारी पशुओं की चोरी करने के लिए कुख्यात थे। ऋग्वेद में घोड़ा, बैल, भैंस, भैंसा, भेड़, बकरी, ऊँट तथा सरामा नामक एक पवित्र कुतिया का उल्लेख है। जबकि बाघ और हाथी का उल्लेख नहीं है। ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल में खेती प्रक्रिया का वर्णन मिलता है। एक ही अनाज यव अथवा जौ का उल्लेख है।

ऋग्वेद में बढ़ई, रथकार, बुनकर, चर्मकार, कुम्हार आदि शिल्पियों के उल्लेख मिलते हैं। बढ़ई के लिए तक्षण तथा धातुकर्मी के लिए कर्मार शब्द मिलता है। सोना के लिए हिरण्य शब्द मिलता है। ऋग्वेद में कपास का उल्लेख नहीं मिलता है। इस काल में ऋण देकर ब्याज लेने वाले को बेकनाट (सूदखोर) कहा जाता था।

धार्मिक स्थिति

आर्य बहुवेदववादी होते हुए भी एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे। इस समय प्राकृतिक शक्तियों का मानवीकरण कर उनकी पूजा की गई। यज्ञों का महत्वपूर्ण स्थान था। वे मुख्य रूप से प्रकृति के पूजक थे।
प्रकृति के प्रतिनिधि के रूप में आर्यों के देवताओं की तीन श्रेणियाँ थीं—

1. आकाश के देवता—सूर्य, द्यौस, वरूण, मित्र, पूषन, विष्णु, सवितृ, उषा, अश्विन इत्यादि।
2. अन्तरिक्ष के देवता—इन्द्र, रूद्र, मारूत, वायु, पर्जन्य, मातरिश्वन आदि।
3. पृथ्वी के देवता—अग्नि, सोम, पृथ्वी, बृहस्पति आदि।

ऋग्वेद में इन्द्र का वर्णन सर्वाधिक लोकप्रिय देवता के रूप में किया जाता है, जिसे 250 सूक्त समर्पित हैं। इन्द्र को आर्यों का युद्ध नेता तथा वर्षा, आँधी, तूफान का देवता माना जाता है।

ऋग्वेद के 5वें मण्डल में अग्नि सूक्त वर्णित है। जिसमें अग्नि की स्तुति में 200 सूक्त मिलते हैं। ऋगवेद काल में इन्द्र के बाद अग्नि दूसरे सबसे महत्वपूर्ण देवता थे। इस काल में अग्नि देवताओं तथा मनुष्यों के बीच मध्यस्थ था। इसके माध्यम से देवताओं को आहुतियाँ दी जाती थीं।

तीसरे प्रमुख देवता वरूण थे जो जलनिधि का प्रतिनिधित्व करते हैं। वरूण को ऋतस्य गोपा कहा गया है। 'ऋतस्य गोपा' के रूप में 'वरूण' पारिस्थितिकी (Ecology) व नैतिकता (Ethics) का संरक्षक देवता माना गया है। ऋग्वेद के 9वें मण्डल में सोम की स्तुति है। सोम को पेय पदार्थ का देवता माना जाता है। द्यौस को ऋग्वैदिक कालीन देवों में सबसे प्राचीन माना जाता है।

गायत्री मंत्र ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में उल्लेखित है। इसके रचनाकार विश्वामित्र हैं। यह सूर्य देवता को समर्पित है। देवताओं की उपासना की मुख्य रीति स्तुतिपाठ करना तथा यज्ञ बलि अर्पित करना था। स्तुति पाठ पर अधिक जोर था।

ऋग्वैदिक कालीन लोगों की उपासना का दृष्टिकोण भौतिकवादी था। पुनर्जन्म की अवधारणा नहीं थी। यज्ञ की तुलना में प्रार्थना ही अधिक प्रचलित थी।

उत्तरवैदिक काल (Later Vedic Period)

उत्तरवैदिक काल से संबंधित जानकारी हमें सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद आदि से प्राप्त होती है। उत्तरवैदिक काल में आर्यों के जीवन में स्थायित्व आया। कृषि का महत्व व्यापक रूप से बढ़ा तथा विंध्याचल के उत्तर के सम्पूर्ण क्षेत्र में पहुँचने में सफल हुए।

भौगोलिक विस्तार

उत्तरवैदिक काल में आर्यों के प्रसार का वर्णन शतपथ ब्राह्मण के विदेह माधव की कथा में मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में रेवा (नर्मदा नदी) का उल्लेख है। उत्तरवैदिक साहित्य में त्रिकबुद, कौच्च, मैनाक आदि पर्वतों का उल्लेख है, जो पूर्वी हिमालय में पड़ते हैं।

ऋग्वैदिक आर्यों ने ब्रह्मवर्त से आगे बढ़कर गंगा-यमुना दोआब तथा उसके निकट के क्षेत्र पर अधिकार करके उसका नाम ब्रह्मर्षि देश रखा। तत्पश्चात् हिमालय और विंध्याचल के मध्य क्षेत्र पर अधिकार करके उसका नाम मध्य देश रखा। कालांतर में सम्पूर्ण उत्तरी भारत उनके अधिकार में आ गया, जिसका नाम उन्होंने आर्यावर्त रखा।

राजनीतिक स्थिति

उत्तरवैदिक काल में पहली बार क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ। पुरू एवं भरत कबीला मिलकर कुरू तथा तुर्वस एवं क्रिवी मिलकर पांचाल कहलाए। प्रारंभिक कुरूओं की राजधानी आसन्दीवत् थी, जिसके अंतर्गत कुरूक्षेत्र (सरस्वती एवं दृषद्वती के बीच की भूमि) सम्मिलित था। बाद में हस्तिनापुर उनकी राजधानी हो गई।

पांचालों की राजधानी काम्पिल्य थी। पांचालों के प्रसिद्ध शासक प्रवाहण जैवालि विद्वानों के संरक्षक थे। शतपथ ब्राह्मण में पांचाल को वैदिक सभ्यता का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि कहा गया है। उत्तरवैदिक काल में पांचाल सर्वाधिक विकसित राज्य था।

उत्तरवैदिक काल में छोटे-छोटे जन मिलकर जनपद में परिवर्तित हो गए। इसी समय राष्ट्र शब्द का प्रयोग भी पहली बार हुआ। राजा की उत्पत्ति का सिद्धांत सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है। अधिकारों में वृद्धि के परिणामस्वरूप अलग-अलग दिशाओं के राजा के नाम अलग-अलग होने लगे। जैसे—

तालिका 3.2: विभिन्न दिशाओं में राजाओं के नाम

क्षेत्र	राज्य का नाम	राजा का नाम
पूर्व	साम्राज्य	सम्राट
पश्चिम	स्वराज्य	स्वराट
उत्तर	वैराज्य	विराट
दक्षिण	भोज्य	भोज
मध्य देश	राज्य	राजा

राजा का राज्याभिषेक राजसूय यज्ञ के द्वारा सम्पन्न होता था, जिसका विस्तृत वर्णन शतपथ ब्राह्मण से मिलता है, राजा की सहायता के लिए उच्च कोटि के अधिकारी थे, जिन्हें रत्निन कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण में 12 रत्नियों का वर्णन मिलता है।

सबसे प्राचीन संस्था विदथ उत्तरवैदिक काल में समाप्त हो गई। राजा पर सभा और समिति का नियंत्रण समाप्त हो गया।

अथर्ववेद में सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है। उत्तरवैदिक काल में राजतंत्र ही शासन का आधार था। कहीं-कहीं गणतंत्र के उदाहरण भी मिलते हैं। स्थायी सेना नहीं होती थी।

राजा न्याय का सर्वोच्च अधिकारी होता था। ब्राह्मण को मृत्युदण्ड नहीं दिया जाता था। उत्तरवैदिक काल में राजा अपनी प्रजा से नियमित कर वसूलने लगा, जिसे बलि, शुल्क या भाग कहा जाता था। इसकी मात्र 1/16 भाग थी।

सामाजिक स्थिति

उत्तरवैदिक काल में सामाजिक व्यवस्था का आधार वर्णाश्रम व्यवस्था ही था, यद्यपि वर्ण व्यवस्था में कठोरता आने लगी थी। समाज में चार वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र थे। ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य इन तीनों को द्विज कहा जाता था। ये उपनयन संस्कार के अधिकारी थे। चौथा वर्ण (शूद्र) उपनयन संस्कार का अधिकारी नहीं था और यहीं से शूद्रों को अपात्र या आधारहीन मानने की प्रक्रिया शुरू हो गई।

यज्ञ का अनुष्ठान बढ़ जाने के कारण ब्राह्मणों की शक्ति में अपार वृद्धि हुई। ब्राह्मण लोग अपने यजमानों के लिए तथा अपने लिए धार्मिक अनुष्ठान और यज्ञ करते थे। इन्हें अदायी (दान लेने वाला) और सोमपाई (भ्रमण करने वाला) कहा गया है।

ऐतरेय ब्राह्मण में चारों वर्णों के कर्तव्यों का वर्णन मिलता है। इस काल में केवल वैश्य ही कर चुकाते थे। ब्राह्मण एवं क्षत्रिय दोनों वैश्यों से वसूले राजस्व पर जीते थे। शूद्र का कार्य अन्य वर्गों की सेवा करना था। समाज में रथकार का स्थान ऊँचा था, जिसका उपनयन संस्कार किया जाता था।

ऋग्वैदिक काल की अपेक्षा उत्तरवैदिक काल में स्त्रियों की दशा में गिरावट आई। ऐतरेय ब्राह्मण में पुत्री को सभी दु:खों का स्रोत तथा पुत्र को परिवार का रक्षक बताया गया है।

उत्तरवैदिक काल में आश्रम व्यवस्था स्थापित हुई। जिसमें केवल तीन आश्रमों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथ वानप्रस्थ की जानकारी मिलती है, चौथे आश्रम सन्यास की अभी स्पष्ट स्थापना नहीं हुई थी।

आर्थिक स्थिति

उत्तरवैदिक काल में कृषि आर्यों का मुख्य व्यवसाय हो गया। लोहे के उपकरणों के प्रयोग में कृषि क्षेत्र में क्रान्ति आ गई। यजुर्वेद में लोहे के लिए श्याम अयस एवं कृष्ण अयस शब्द का प्रयोग हुआ है। शतपथ ब्राह्मण में कृषि की चार क्रियाओं—जुताई, बुआई, कटाई और मड़ाई का उल्लेख हुआ है। पशुपालन गौण पेशा हो गया।

इस काल की मुख्य फसल धान और गेहूँ हो गई। यजुर्वेद में ब्रीहि (धान), यव (जौ), माण (उड़द), मुद्ग (मूँग), गोधूम (गेहूँ), मसूर आदि अनाजों का वर्णन मिलता है। अथर्ववेद में सर्वप्रथम नहरों का उल्लेख हुआ है।

तैतरीय संहिता में ऋण के लिए कुसीद शब्द मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में महाजनी प्रथा का पहली बार ज़िक्र हुआ है तथा सूदखोर को कुसीदिन कहा गया है। निष्क, शतमान, पाद, कृष्णल आदि माप की विभिन्न इकाइयाँ थीं। द्रोण अनाज मापने के लिए प्रयुक्त किए जाते थे।

उत्तरवैदिक काल के लोग चार प्रकार के मृद्भाण्डों से परिचित थे—काला व लाल मृद्भाण्ड, काले पॉलिशदार मृद्भाण्ड, चित्रित धूसर मद्भाण्ड और लाल मृद्भाण्ड।

उत्तरवैदिक आर्यों को समुद्र का ज्ञान हो गया था। इस काल के साहित्य में पश्चिमी और पूर्वी दोनों प्रकार के समुद्रों का वर्णन है।

धार्मिक स्थिति

उत्तरवैदिक आर्यों के धार्मिक जीवन में मुख्यत: तीन परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं—देवताओं की महत्ता में परिवर्तन, अराधना की रीति में परिवर्तन तथा धार्मिक उद्देश्यों में परिवर्तन।

उत्तरवैदिक काल में इन्द्र के स्थान पर सृजन के देवता प्रजापति को सर्वोच्च स्थान मिला। रूद्र और विष्णु दो अन्य प्रमुख देवता इस काल के माने जाते हैं। वरूण मात्र जल के देवता माने जाने लगे, जबकि पूषन अब शूद्रों के देवता हो गए।

इस काल में प्रत्येक वेद के अलग-अलग पुरोहित हो गए। ऋग्वेद का पुरोहित होता, सामवेद का उद्गाता, यजुर्वेद का अध्वर्यु एवं अथर्ववेद का ब्रह्मा कहलाता था। उत्तरवैदिक काल में अनेक प्रकार के यज्ञ प्रचलित थे, जिनमें सोमयज्ञ या अग्निष्टोम यज्ञ, अश्वमेघ यज्ञ, वाजपेय यज्ञ एवं राजसूय यज्ञ महत्वपूर्ण थे।

मृत्यु की चर्चा सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण तथा मोक्ष की चर्चा सर्वप्रथम उपनिषद में मिलती है। पुनर्जन्म की अवधरणा वृहदराण्यक उपनिषद में मिलती है। निष्काम कर्म के सिद्धांत का प्रतिपादन सर्वप्रथम ईशोपनिषद् में किया गया है।

वैदिक साहित्य (Vedic Literature)

ऋग्वेद

ऋग्वेद विश्व का प्रथम प्रमाणिक ग्रन्थ है। यह देवताओं को स्तुति से संबंधित रचनाओं का संग्रह है। ऋग्वेद 10 मण्डलों में विभक्त है। इसमें 2 से 7 तक के मण्डल प्राचीनतम माने जाते हैं। प्रथम एवं दशम मण्डल बाद में जोड़े गए हैं। इसमें कुल 1028 सूक्त हैं। इसकी भाषा पद्य रूप में है।

ऋग्वेद की अनेक बातें ईरानी भाषा के प्राचीनतम ग्रन्थ अवेस्ता में मिलती हैं। प्रसिद्ध वाक्य असतो मा सद्गमय ऋग्वेद से लिया गया है। प्रसिद्ध गायत्री मंत्र ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में है।

यजुर्वेद

'यजुस + वेद' शब्दों से यजुर्वेद शब्द की व्युतपत्ति हुई। यजुस का अर्थ है यज्ञ। यजुर्वेद के मंत्रों का उच्चारण आध्वर्यु नामक पुरोहित करता था। इस वेद में अनेक प्रकार के यज्ञों को सम्पन्न करने की विधियों का उल्लेख है। यह गद्य तथा पद्य दोनों में लिखा गया है। यजुर्वेद के दो मुख्य भाग हैं—कृष्ण यजुर्वेद एवं शुक्ल यजुर्वेद। इसमें पहली बार राजसूय तथा वाजपेय जैसे दो राजकीय समारोहों का उल्लेख है। शुक्ल यजुर्वेद को वाजसनेयी संहिता भी कहा जाता है।

सामवेद

सामवेद का संबंध गायन विद्या से है। इस वेद के मंत्रों का उच्चारणकर्ता पुरोहित-'होता' (होतृ) कहलाता था। इसे भारतीय संगीत का मूल माना जाता है।

अथर्ववेद

अथर्ववेद की रचना अथर्वा ऋषि द्वारा की गई है। अत: अथर्वा ऋषि के नाम पर ही इसे अथर्ववेद कहते हैं। इस वेद में कुल 20 मण्डल, 731 सूक्त एवं 5839 मंत्र हैं। इस वेद के महत्वपूर्ण विषय हैं—ब्रह्मज्ञान, औषधि प्रयोग, रोग निवारण, तंत्र-मंत्र, टोना-टोटका आदि। इसे ब्रह्मवेद, भैषज्यवेद एवं महीवेद के नाम से भी जाना जाता है।

तालिका 3.3: वैदिक साहित्य से संबंधित साहित्य

वेद	ब्राह्मण	उपनिषद	उपवेद
ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषितकी	ऐतरेयोपनिषद्, कोषितकी उपनिषद्	आयुर्वेद
यजुर्वेद			धनुर्वेद
1. शुक्ल यजुर्वेद	शतपथ	ईशोपनिषद्, वृहदारण्य कोपनिषद्	
2. कृष्ण यजुर्वेद	तैतरीय	कठोपनिषद्, मैत्रायणी उपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद्	
सामवेद	पंचविश, षड्विश एवं जैमिनीय	छान्दाम्योपनिषद् कैनोपनिषद	गन्धर्ववेद
अथर्ववेद	गोपथ ब्राह्मण	प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद, माण्डुक्योपनिषद्	शिल्पवेद

ब्राह्मण ग्रन्थ

यज्ञों एवं कर्मकाण्डों के विधान एवं इनकी क्रियाओं को भली-भाँति समझने के लिए नवीन ब्राह्मण ग्रन्थ की रचना हुई। यज्ञ के विषयों का अच्छी तरह से प्रतिपादन करने वाले ग्रन्थ ही ब्राह्मण ग्रन्थ कहे गए। ब्राह्मण ग्रन्थों में वैदिक संहिताओं की गद्यात्मक व्याख्या है।

आरण्यक

आरण्यकों में दार्शनिक एवं रहस्यात्मक विषयों, जैसे—आत्मा, मृत्यु, जीवन आदि का वर्णन है। इन ग्रन्थों को आरण्यक इसलिए कहा गया है, क्योंकि इन ग्रन्थों को आरण्यक अर्थात् वन में पढ़ा जाता था। अथर्ववेद का कोई आरण्यक ग्रन्थ नहीं है।

तालिका 3.4: प्रमुख दर्शन एवं उसके प्रवर्तक

दर्शन	प्रवर्तक
योग	पतंजलि (योगसूत्र)
न्याय	गौतम (न्यायसूत्र)
सांख्य	कपिल (सांख्य कारिका)
वैशेषिक	कणाद या उलूक
पूर्व मीमांसा	जैमिनी
उत्तर मीमांसा	बादरायण (ब्रह्मसूत्र)

उपनिषद्

उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ है—समीप बैठना अर्थात् ब्रह्म विद्या को प्राप्त करने के लिए गुरू के समीप बैठना। उपनिषद् वैदिक साहित्य के अन्तिम भाग हैं, इसलिए इन्हें वेदान्त भी कहा जाता है। इनकी कुल संख्या 108 है। प्रमुख 12 उपनिषद् हैं। भारत का प्रसिद्ध राष्ट्रीय आदर्शवाक्य सत्यमेव जयते मुण्डकोपनिषद् से तथा 'तत्वमसि' नामक दार्शनिक अवधारणा छान्दोग्य उपनिषद् से ली गई है। आध्यात्मिक ज्ञान के संबंध में नचिकेता एवं यम संवाद कठोपनिषद् से लिया गया है। उपनिषद् प्राचीनतम दार्शनिक विचारों का संग्रह है।

वेदांग

वेदों के अर्थ को अच्छी तरह समझने में वेदांग सहायक होते हैं। इसमें कम शब्दों में अधिक तथ्य रखने का प्रयास किया गया है। वेदांगों की संख्या छ: है—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द एवं ज्योतिष।

वेदांग		अर्थ
शिक्षा	—	शब्दों के उच्चारण के नियम
कल्प	—	कर्मकाण्डों के विधान
व्याकरण	—	भाषा के विभिन्न तत्वों का विवेचन
निरूक्त	—	वैदिक साहित्य का शब्दकोश
छन्द	—	वैदिक साहित्य का काव्य शास्त्र
ज्योतिष	—	खगोल विद्या

अध्याय सार संग्रह

- जब आर्य भारत में आए, तब वे तीन श्रेणियों में विभक्त थे—योद्धा, पुरोहित और सामान्य। जन आर्यों का प्रारंभिक विभाजन था। शूद्रों के चौथे वर्ग का उद्‌भव ऋग्वैदिक काल के अंतिम दौर में हुआ।
- इस काल में राजा की कोई नियमित सेना नहीं थी। युद्ध के समय संगठित की गई सेना को 'नागरिक सेना' कहते थे।
- ऋग्वेद में किसी परिवार का एक सदस्य कहता है—मैं कवि हूँ, मेरे पिता वैद्य हैं और माता चक्की चलाने वाली है, भिन्न-भिन्न व्यवसाओं से जीविकोपार्जन करते हुए हम एक साथ रहते हैं।
- निष्क (Nishaka) गले का स्वर्ण आभूषण था जिसका प्रयोग आर्य लोग विनिमय (Mode of Exchange) के रूप में भी करते थे।
- ऋग्वेद में 'अनस' शब्द का प्रयोग बैलगाड़ी के लिए किया गया है।
- ऋग्वैदिक काल में दो अमूर्त देवता थे, जिन्हें श्रद्धा एवं मनु कहा जाता था।
- वैदिक लोगों ने सर्वप्रथम ताँबे की धातु का इस्तेमाल किया था।
- भारत में आर्य लोग जहाँ सर्वप्रथम बसे, वह सारा प्रदेश 'सप्त सिंधु प्रदेश' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- ऋग्वेद में सोम देवता के बारे में सर्वाधिक उल्लेख मिलता है।
- अग्नि को अतिथि कहा गया है, क्योंकि मातृष्णवन उन्हें स्वर्ग से धरती पर लाया था।
- यज्ञों का सम्पादन कार्य 'ऋद्विज' करते थे। इनके चार प्रकार थे—होता, अध्वर्यु, उद्‌गाता और ब्रह्म।
- संतान की इच्छुक विधवा महिलाएँ नियोग प्रथा का वरण करती थीं जिसके अंतर्गत उन्हें अपने देवर के साथ साहचर्य स्थापित करना पड़ता था।
- मुंडकोपनिबद् में सत्यमेव जयते वर्णित है।
- मुंडका उपनिषद् में यज्ञ को टूटी हुई नौका के समान माना गया है।
- उत्तरवैदिक काल में पहली बार राजत्व की अवधारण आई तथा सभा समिति जैसी परिषदें अधिकारविहीन हो गईं।
- उत्तरवैदिक काल में समाज पितृसतात्मक बना रहा तथा महिलाओं की स्थिति में तुलनात्मक रूप में गिरावट आई।
- 'पणि' व्यापार के साथ-साथ मवेशियों की चोरी भी करते थे। उन्हें आर्यों का शत्रु माना जाता था।
- उत्तर वैदिक काल के लोग पक्की ईंटों का इस्तेमाल करना नहीं जानते थे।
- अथर्ववेद में एक स्थान पर विश द्वारा राजा के चुनाव का वर्णन मिलता है।
- शतपथ ब्राह्मण के अनुसार राजा वही होता है, जिसे प्रजा का अनुमोदन प्राप्त हो।
- यम और नचिकेता की कहानी कठोपनिषद में वर्णित है।
- उत्तर वैदिक काल में स्थायी सैन्य व्यवस्था का श्रीगणेश हुआ।
- उत्तर वैदिक काल में सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य कुरु और पांचाल थे।
- शिल्पियों में रथकार आदि जैसे कुछ वर्गों का स्थान ऊँचा था और उन्हें यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार प्राप्त था।
- तैत्तरीय ब्राह्मण में करघा के लिए 'वेमन' शब्द का प्रयोग मिलता है।
- उत्तर वैदिक कालीन आर्यों को गोबर की खाद तथा ऋतुओं के बारे में जानकारी थी।
- भारत में लोहे का साक्ष्य उत्तर वैदिक काल में सर्वप्रथम अंतरजीखेड़ा से प्राप्त होता है।
- राजसूय यज्ञ करने वाले प्रधान पुरोहित को 2,40,000 गायें दक्षिणा में दी जाती थी।
- उत्तर वैदिक काल में धार्मिक क्षेत्र में पशुओं की बलि देने की प्रथा का प्रचलन हुआ।